MAKHANLAL CHATURVEDI NATIONAL UNIVERSITY OF JOURNALISM AND COMMUNICATION

// UNIVERSITY LIBRARY //

-: NEWS CLIPPING SERVICE -:

DATE:28 APRIL 2026

एमसीयू में वर्चुअल प्रोडक्शन पर विशेष व्याख्यान आयोजित

वर्चुअल प्रोडक्शन में अपार संभावनाएं मौजूद : उत्सव सिन्हा

स्वदेश ज्योति संवाददाता, भोपाल

तकनीक ने मीडिया प्रोडक्शन को पूरी तरह बदल दिया है। अब परंपरागत भारी भरकम स्टूडियो, सेट के बजाए तकनीक की सहायता से इनस्टूडियो क्वालिटी प्रोडक्शन हो रहा है। मुंबई से वर्चुअल प्रोडक्शन के विशेषज्ञ उत्सव सिन्हा ने कही। वे एमसीयू के सिनेमा अध्ययन विभाग में आयोजित विशेष व्याख्यान में बोल रहे थे। वर्चुअल प्रोडक्शन टेक्नालाजी पर बोलते हुए सिन्हा ने कहा कि आज से 10-15 साल पहले प्रोडक्शन का पूरा परिदृश्य बिल्कुल ही अलग था।

स्पेशल इफैक्ट्स के लिए तब ग्रीन स्क्रीन पर काम होता था। आज इन कैमरा वीएफएक्स, डिजिटल वीएफएक्स जैसी आधुनिक तकनीकों का उपयोग हो रहा है। इससे सिनेमा के क्षेत्र में बहुत ही उच्च गुणवत्ता का कार्य हो रहा हे। उन्होंने बताया कि तकनीक सृजनात्मकता को और बेहतर बनाने में सहायक साबित हो रही है।

सिनेमा सहित क्रिएटिव प्रोडक्शन के काम से जुड़ने के अनेकों अवसर

सिन्हा ने कहा कि वर्चुअल प्रोडक्शन दरअसल टेक्नालाजी और प्रोडक्शन का मिलाजुला रूप है। यह सीधे तौर पर प्रोडक्शन ही है। उन्होंने बताया कि वर्चुअल प्रोडक्शन में रिसर्च बहुत अहम होता है। सही डेटा और रिसर्च के साथ प्रोडक्शन की गुणवत्ता भी बढ़ जाती है। उन्होंने अनेकों फिल्मों में वीएफएक्स से तैयार सीन की बारीकियों को समझाया। उत्सव सिन्हा पिछले 25 वर्षों से राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर वर्चुअल प्रोडक्शन के क्षेत्र में काम कर रहे हैं।

इस अवसर पर सिन्हा ने शार्टस डिजाइन से लेकर प्रोग्राम के सीन प्रोडक्शन की विविध बारीकियों को समझाया। हालीवुड फिल्म जोकर में एक दृश्य में स्पेशल इफैक्ट को समझाते हुए उन्होंने कहा कि आज तकनीक के जरिये एन्हैन्स्ड एनवायरमेंट तैयार किया जाना आसान हो गया है। उन्होंने अपने व्याख्यान के दौरान अनेकों राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय फिल्मों में स्पेशल इफैक्ट्स और प्रोडक्शन की विशिष्ट तकनीकों को विस्तार से समझाया। उन्होंने कहा कि बेहतर प्रोडक्शन के लिए पूरी टीम का संजीदगी के साथ काम करना बहुत अहम होता है। निर्देशक को सीन को स्वयं अनुभव करना होता है तभी जाकर अच्छा प्रोडक्शन हो सकता है। इस अवसर पर विद्यार्थियों से प्रश्नोत्तर सत्र भी आयोजित हुआ। इस कार्यक्रम में विज्ञापन एवं जनसंपर्क तथा सिनेमा अध्ययन विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. डा. पवित्र श्रीवास्तव ने मुख्य वक्ता का आभार किया। कार्यक्रम में विभाग के प्राध्यापक, सहित समस्त विद्यार्थी मौजूद थे।

NEWS CLIPPING SERVICE FROM 'MCNUJC LIBRARY
'SWADESH JYOTI'28 APRIL.2026

वर्चुअल प्रोडक्शन बना नया करियर ऑप्शन

एमसीयू में व्याख्यान, तकनीक से बदला सिनेमा का स्वरूप

जागरण, भोपाल। तकनीक के बढ़ते प्रभाव ने मीडिया और सिनेमा प्रोडक्शन की दुनिया को पूरी तरह बदल दिया है। अब पारंपरिक सेट और भारी-भरकम स्टूडियो की जगह वर्चुअल प्रोडक्शन तकनीक ने ले ली है। यह बात मुंबई से आए वर्चुअल प्रोडक्शन विशेषज्ञ उत्सव सिन्हा ने एमसीयू के सिनेमा अध्ययन विभाग में

आयोजित विशेष व्याख्यान में कही। उन्होंने बताया कि पहले जहां स्पेशल इफेक्ट्स के लिए ग्रीन स्क्रीन का सहारा लिया जाता था, वहीं अब इन-कैमरा वीएफएक्स और डिजिटल तकनीकों से उच्च गुणवत्ता का प्रोडक्शन संभव हो गया है। वर्चुअल प्रोडक्शन को तकनीक और रचनात्मकता का संगम बताते हुए उन्होंने कहा कि इसमें रिसर्च की अहम भूमिका होती है। उत्सव सिन्हा ने हॉलीवुड फिल्म 'जोकर' सहित कई फिल्मों के उदाहरण देकर स्पेशल इफेक्ट्स की बारीकियां समझाईं। उन्होंने छात्रों को प्रोडक्शन की प्रक्रिया, टीमवर्क और निर्देशक की भूमिका पर भी विस्तार से जानकारी दी। कार्यक्रम में प्रश्नोत्तर सत्र भी हुआ, जिसमें विद्यार्थियों ने उत्साह से भाग लिया।

NEWS CLIPPING SERVICE FROM 'MCNUJC LIBRARY
'DANIK JAGRAN'28 APRIL.2026

परंपरागत भारी भरकम स्टूडियो, सेट के बजाए हो रहा 'इनस्टूडियो क्वालिटी प्रोडक्शन'

एमसीयू में वर्चुअल प्रोडक्शन पर विशेष व्याख्यान आयोजित

हरिभूमि न्यूज ⏭ भोपाल

तकनीक ने मीडिया प्रोडक्शन को पूरी तरह बदल दिया है। अब परंपरागत भारी भरकम स्टूडियो, सेट के बजाए तकनीक की सहायता से इनस्टूडियो क्वालिटी प्रोडक्शन हो रहा है। यह बात मुंबई से वर्चुअल प्रोडक्शन के विशेषज्ञ उत्सव सिन्हा ने कही। वे एमसीयू के सिनेमा अध्ययन विभाग में आयोजित विशेष व्याख्यान में बोल रहे थे। सिन्हा ने कहा कि आज से 10-15 साल पहले प्रोडक्शन का पूरा परिदृश्य बिल्कुल ही अलग था। स्पेशल इफैक्ट्स के लिए तब ग्रीन स्क्रीन पर काम होता था। आज इन कैमरा वीएफएक्स, डिजिटल वीएफएक्स जैसी आधुनिक तकनीकों का उपयोग हो रहा है, इससे सिनेमा के क्षेत्र में बहुत ही उच्च गुणवत्ता का कार्य हो रहा हे। उन्होंने बताया कि तकनीक सृजनात्मकता को और बेहतर बनाने में सहायक साबित हो रही है।

टेक्नालाजी और प्रोडक्शन का मिलाजुला रूप है 'वर्चुअल प्रोडक्शन'

सिन्हा ने कहा कि वर्चुअल प्रोडक्शन दरअसल टेक्नालाजी और प्रोडक्शन का मिलाजुला रूप है। यह सीधे तौर पर प्रोडक्शन ही है। उन्होंने बताया कि वर्चुअल प्रोडक्शन में रिसर्च बहुत अहम होता है। सही डेटा और रिसर्च के साथ प्रोडक्शन की गुणवत्ता भी बढ़ जाती है। उन्होंने अनेकों फिल्मों में वीएफएक्स से तैयार सीन की बारीकियों को समझाया। उत्सव सिन्हा पिछले 25 वर्षों से राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर वर्चुअल प्रोडक्शन के क्षेत्र में काम कर रहे हैं। हालीवुड फिल्म जोकर में एक दृश्य में स्पेशल इफैक्ट को समझाते हुए उन्होंने कहा कि आज तकनीक के जरिये एन्हैंस्ड एनवायरमेंट तैयार किया जाना आसान हो गया है। इस अवसर पर विज्ञापन एवं जनसंपर्क तथा सिनेमा अध्ययन विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. डॉ. पवित्र श्रीवास्तव ने मुख्य वक्ता का आभार किया।

NEWS CLIPPING SERVICE FROM 'MCNUJC LIBRARY
'HARIBHOOMI'28 APRIL.2026

व्याख्यान | माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता व संचार विश्वविद्यालय में विशेष व्याख्यान, सिनेमा और क्रिएटिव इंडस्ट्री में नए अवसरों पर हुआ मंथन

वर्चुअल प्रोडक्शन ने बदली फिल्म निर्माण की दुनिया, युवाओं के लिए अपार संभावनाएं

नवदुनिया प्रतिनिधि, भोपालः मीडिया और सिनेमा के क्षेत्र में तेजी से बदलती तकनीक ने प्रोडक्शन की पूरी प्रक्रिया को नए आयाम दिए हैं। अब पारंपरिक भारी-भरकम सेट और लोकेशन पर निर्भरता कम हो गई है और स्टूडियो के भीतर ही उच्च गुणवत्ता का कंटेंट तैयार किया जा रहा है। यह बात मुंबई से आए वर्चुअल प्रोडक्शन विशेषज्ञ उत्सव सिन्हा ने कही। वे माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता व संचार विश्वविद्यालय (एमसीयू) के सिनेमा अध्ययन विभाग में सोमवार को आयोजित विशेष व्याख्यान को संबोधित कर रहे थे।

एमसीयू में आयोजित विशेष व्याख्यान में संबोधित करते वर्चुअल प्रोडक्शन विशेषज्ञ उत्सव सिन्हा। • सौजन्य: आयोजक

- शाट डिजाइन, सीन कंपोजिशन और प्रोडक्शन प्लानिंग पर चर्चा
- बोले- डिजिटल तकनीकों से प्रोडक्शन हुआ अधिक प्रभावी

वीएफएक्स जैसी आधुनिक तकनीकों ने प्रोडक्शन को अधिक प्रभावी बनायाः उत्सव सिन्हा ने अपने संबोधन में बताया कि लगभग 10-15 वर्ष पहले तक फिल्म निर्माण का परिदृश्य पूरी तरह अलग था। उस समय स्पेशल इफेक्ट्स के लिए मुख्यतः ग्रीन स्क्रीन का उपयोग किया जाता था, जबकि आज इन-कैमरा वीएफएक्स और डिजिटल वीएफएक्स जैसी आधुनिक तकनीकों ने प्रोडक्शन को अधिक प्रभावी और यथार्थपरक बना दिया है। उन्होंने कहा कि तकनीक केवल प्रक्रिया को आसान नहीं बनाती, बल्कि सृजनात्मकता को भी नए स्तर पर ले जाती है।

उन्होंने वर्चुअल प्रोडक्शन को तकनीक और रचनात्मक प्रोडक्शन का समन्वित रूप बताते हुए कहा कि यह सीधे तौर पर प्रोडक्शन प्रक्रिया का ही उन्नत स्वरूप है। इसमें रिसर्च की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। सही डेटा और गहन अध्ययन के आधार पर ही बेहतर गुणवत्ता का निर्माण संभव हो पाता है। उन्होंने अपने 25 वर्षों के अनुभव साझा करते हुए राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय परियोजनाओं में किए गए कार्यों की बारीकियों को विद्यार्थियों के सामने रखा।

व्याख्यान के दौरान उन्होंने विभिन्न फिल्मों के उदाहरणों के माध्यम से स्पेशल इफेक्ट्स की तकनीकों को समझाया। हालीवुड फिल्म 'जोकर' के एक दृश्य का उल्लेख करते हुए उन्होंने बताया कि आज तकनीक के माध्यम से एन्हैंस्ड एनवायरमेंट तैयार करना पहले की तुलना में कहीं अधिक सरल और प्रभावी हो गया है। उन्होंने शाट डिजाइन, सीन कंपोजिशन और प्रोडक्शन प्लानिंग के विभिन्न पहलुओं पर भी विस्तार से चर्चा की।

उत्सव सिन्हा ने कहा कि किसी भी प्रोडक्शन की सफलता टीमवर्क पर निर्भर करती है। निर्देशक को सीन को गहराई से अनुभव करना होता है, तभी वह दर्शकों तक प्रभावी रूप से पहुंच पाता है। उन्होंने विद्यार्थियों को इस क्षेत्र में करियर की असीम संभावनाओं के बारे में भी बताया और उन्हें तकनीक के साथ रचनात्मकता को जोड़ने की सलाह दी।

कार्यक्रम के अंत में प्रश्नोत्तर सत्र आयोजित किया गया। इस अवसर पर विज्ञापन व जनसंपर्क तथा सिनेमा अध्ययन विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. डा. पवित्र श्रीवास्तव ने मुख्य वक्ता का आभार व्यक्त किया।

NEWS CLIPPING SERVICE FROM 'MCNUJC LIBRARY
'NAVDUNIYA'28 APRIL.2026